Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level -1 || Level -2

वैकल्पिक पुस्तक

राजस्थान सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

भूगोल

1. राजस्थान की उत्पत्ति 1
2. राजस्थान के भौतिक प्रदेश एवं विभाग 6
   - पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश
   - अरावली प्रदेश
   - पूर्वी मैदानी प्रदेश
   - दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश
3. अपवाह तंत्र 12
   - नदियाँ, परियोजनायें, झीलें
4. जलवायु 21
5. मृदा/मिट्टी 25
6. वन संसाधन एवं वनस्पति 27
7. वन्य जीव एवं इसका संरक्षण 30
8. खनिज संपदा 33
9. ऊर्जा के स्त्रोत 36
10. प्रमुख उद्योग 42
11. पशुधन एवं कृषि 46
12. जनसंख्या 56

राजव्यवस्था

1. राज्यपाल 59
2. मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद 61
3. राज्यविधान मंडल 63
4. जिला प्रशासन 68
5. स्थानीय स्वशासन 72
6. राज्य लोक सेवा आयोग 79
7. राज्य मानवाधिकार आयोग 80
8. लोकायुक्त 81
9. राज्य निर्वाचन आयोग 82

इतिहास

1. सामान्य परिचय 83
2. प्राचीन सभ्यतायें 85
3. महाजनपद काल 89
4. मध्य काल 91
    - मेवाड का इतिहास
    - मारवाड का इतिहास
    - अजमेर का इतिहास
    - अलवर का इतिहास
    - भरतपुर का इतिहास
    - जैसलमेर का इतिहास
5. आधुनिक काल– 126
    - 1857 की क्रांति
    - किसान एवं जनजाति आन्दोलन
    - प्रमुख प्रजामण्डल
    - राजस्थान का एकीकरण

कला एवं संस्कृति

1. प्रमुख त्यौहार 138
2. लोक देवता 145
3. लोक देवियां 149
4. लोक संत 151
5. संप्रदाय, लोकगीत, लोक गायन 154
6. संगीत घराने 156
7. लोक नृत्य, लोक नाट्य 157
8. जनजातियाँ 162
9. चित्रकला 165

10.हस्तकला 168

11.साहित्य 170

12.प्रमुख बोलियाँ 174

13.किले व स्मारक 176

14.जिले व धार्मिक स्थल 183

15.प्रमुख व्यक्तित्व 185

16.आभूषण, वेशभूषा व खान–पान 189

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान की उत्पत्ति

भौगोलिक प्रदेश

अरावली व हाडौती भारत के प्रायद्वीप पठार का हिस्सा है जबकि मरूस्थल व मैदानी भाग भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा है।

राजस्थान : स्थिति, विस्तार एवं आकार

A स्थिति

- भारत ⟶ उत्तर पश्चिम
- विश्व / ग्लोब ⟶ उत्तर पूर्व
- एशिया ⟶ दक्षिण पश्चिम

B विस्तार

- अक्षांश – 23°3′ से 30°12′ उत्तरी अक्षांश
- देशांतर – 69°30′ से 78°17′ पूर्वी देशांतर
- क्षेत्रफल – 3,42,239.74 वर्ग कि.मी.

अंगारालैण्ड:–

पैंजिया का उत्तरी भाग जिससे उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ है।

गोंडवानालैण्ड:–

पैंजिया का दक्षिणी भाग जिससे दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ है।

टेथिस सागर:–

यह एक भूसन्नति है जो अंगारालैण्ड व गोंडवानालैण्ड के मध्य स्थित है।

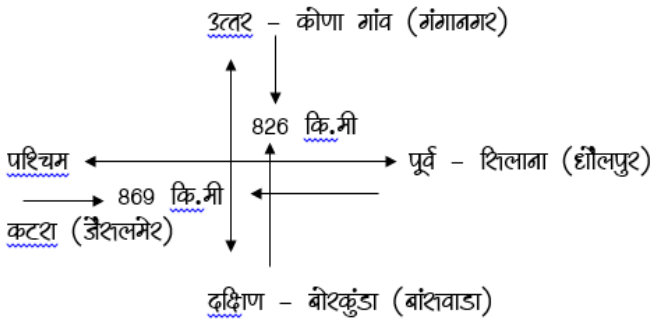

C- आकार

Rhombus – T. H. हैडले ने कहा

विषम कोणीय चतुर्भुजाकार

पतंगाकार

राजस्थान के क्षेत्रफल संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

1. राजस्थान का क्षेत्रफल 342239.74 वर्ग किमी है ।
2. यह भारत के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है ।
3. विश्व क्षेत्रफल का राजस्थान 0.25 प्रतिशत धारण करता है ।
4. राजस्थान भारत का सबसे बडा राज्य है ।
5. राजस्थान का सबसे बडा जिला जैसलमेर है । 38401 वर्ग किमी इसका क्षेत्रफल है ।
6. जैसलमेर सम्पूर्ण राजस्थान का 11.22 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
7. धौलपुर राजस्थान का सबसे छोटा जिला है जिसका क्षेत्रफल 3034 वर्ग किमी है ।
8. धौलपुर सम्पूर्ण राज्य का .89 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
9. जैसलमेर धौलपुर से 12.67 गुणा बडा है ।
10. कर्क रेखा राज्य के डुंगरपुर की सीमा को छूते हुए तथा बांसवाडा के मध्य से होकर गुजरती है ।
11. कर्क रेखा की लम्बाई राज्य में 26 किमी है ।
12. कर्क रेखा पर सबसे लम्बा दिन 13 घंटे 27 मिनट का होता है जो 21 जून को होता है । यह कर्क संक्रांति कहलाता है ।
13. राज्य में पूर्व से पश्चिम समय अंतराल 35 मिनट 8 सैकेण्ड का है ।
14. राज्य का मध्य गांव गगराना नागौर है ।

प्रमुख देश		राजस्थान का क्षेत्रफल (बडा)
जर्मनी	–	बराबर
जापान	–	बराबर
ब्रिटेन	–	दोगुना
श्रीलंका	–	5 गुना
इजराइल	–	17 गुना

राजस्थान के क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बडे एवं सबसे छोटे जिले

बडे जिले	छोटे जिले
जैसलमेर	धौलपुर
बीकानेर	दौसा
बाडमेर	डुंगरपुर
जोधपुर	प्रतापगढ
नागौर	

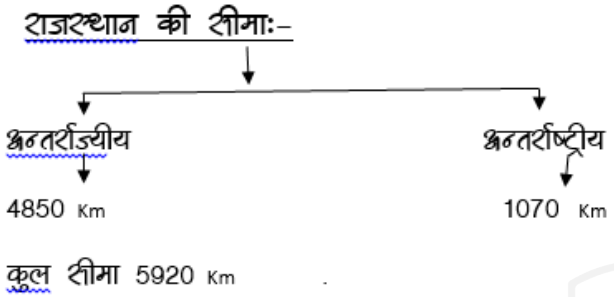

अन्तर्राज्यीय सीमा एवं उन पर स्थित जिले

सीमा- 4850 किमी.

पडौसी राज्य	उनकी सीमा पर राजस्थान के जिले
पंजाब	हनुमानगढ, गंगानगर
हरियाणा	जयपुर, भरतपुर, हनुमानगढ, सीकर, चुरू, झुंझुनु, अलवर
उत्तरप्रदेश	भरतपुर, धौलपुर
मध्यप्रदेश	धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, भीलवाडा, कोटा, बांसवाडा, बांरा, झालवाड, प्रतापगढ, चितोडगढ
गुजरात	बाडमेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाडा

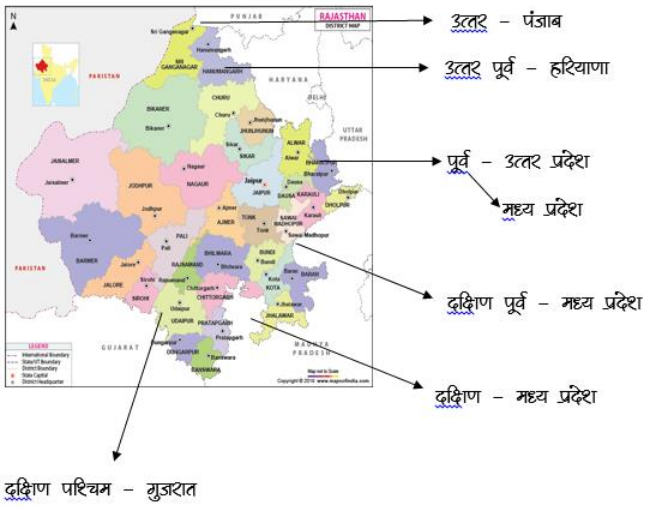

नोटः- (1) राजस्थान के वे जिले जो दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैः-

- हनुमानगढ - पंजाब . हरियाणा
- भरतपुर - हरियाणा . U.P.
- धौलपुर - U.P. + M.P.
- बाँसवाडा - M.P. गुजरात

(2) कोटा व चित्तौडगढः- राजस्थान के वे जिले है जो एक राज्य (M.P.) से दो बार सीमा बनाते हैं।

(3) कोटा :- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है
वह अविखण्डित है।

(4) चित्तौडगढः- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता
है व विखण्डित है।

(5) भीलवाडाः- चित्तौडगढ को 2 भागो में विखण्डित करता है।

(6) अन्तर्राज्यीय सीमा पर

- 25 जिले : राजस्थान के सीमावर्ती जिले.
- 23 जिले : अन्तर्राज्यीय सीमावर्ती
- 4 जिले : अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती
- 2 जिले : अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती (श्रीगंगानगर . बाडमेर)

8 जिले : राजस्थान के वे जिले जो अन्तः स्थलीय (Land locked) सीमा बनाते हैं ।

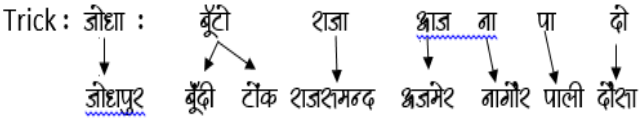

पाली सर्वाधिक 8 जिलों के साथ सीमा बनाता है । जो निम्न है -
बाडमेर, जोधपुर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर, नागौर ।

अजमेर :- चित्तौडगढ के बाद राजस्थान का दूसरा विखण्डित जिला

राजसमन्द :- राजसमन्द अजमेर का दो भागों में विखण्डित करता है।
इसका जिला मुख्यालय इसके नाम से नही है।
राजनगर राजसमन्द का जिला मुख्यालय है।

नागौर :- नागौर सर्वाधिक संभाग मुख्यालयों के साथ सीमा बनाता है
(जयपुर, अजमेर, जोधपुर, बीकानेर)

<u>सीमावर्ती विवाद:-</u>

मानगढ हिल्स विवाद:-
स्थिति = बाँसवाडा
विवाद = राजस्थान-गुजरात के मध्य

बजट 2018-19 में इसके विकास के लिए 7 करोड का प्रस्ताव रखा गया है।

<u>अन्तर्राष्ट्रीय सीमा उस पर स्थिति जिले</u>

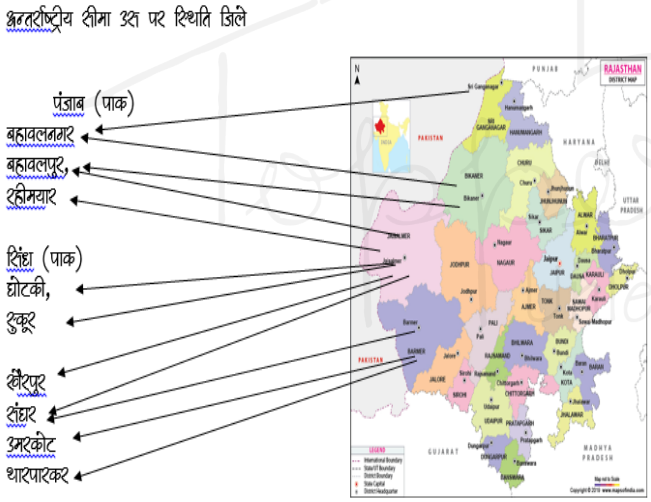

1. पाकिस्तान का बहावलपुर का सर्वाधिक सीमा गंगानगर के साथ बनाता है ।
2. थारपारकर न्यूनतमक सीमा बाडमेर के साथ बनाता है ।
3. पाकिस्तान के 9 जिले भारत के साथ सीमा बनाते है ।
4. पाकिस्तान के 6 जिले जैसलमेर के साथ सीमा बनाते है ।
5. भारत के 4 जिले पाकिस्तान के साथ सीमा बनाते है ।
6. जैसलमेर सर्वाधिक सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
7. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
8. नाम- सर सिरील रेड क्लिफ रेखा
9. निर्धारण तिथि - 17 अगस्त 1947
10. शुरूआत - हिन्दूमलकोट
11. अंत - शाहगढ(बाडमेर)
12. राजस्थान की कुल सीमा का 18: (1070 किमी.) है।
13. पाकिस्तान प्रान्त राज्य = 2 (पंजाब व सिन्ध)
14. श्रीगंगानगर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सबसे निकटम जिला मुख्यालय है।
15. बीकानेर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है।
16. धौलपुर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है।

राजस्थान के प्रादेशिक के परिवर्तन का स्वरूप एवं वर्तमान नाम

प्राचीन नाम	बदला स्वरूप	वर्तमान नाम
योद्धेय	जोहयावाटी	गंगानगर
जांगल	भटनेर	बीकानेर
अहिच्छत्रपुर	अहिपुर	नागौर
गुर्जर	गुरजान्ना	मण्डोर–जोधपुर
शाकंभरी सांभर	अजयमेरू	अजमेर
श्रीमाल स्वर्णगिरि	गेलोर भीनमाल	बाडमेर
वल्ल	छुंगल (मांड)	जैसलमेर
अर्बुद	चन्द्रावती	सिरोही
विराट	रामगढ	जयपुर
शिवि	चित्तौड	उदयपुर
कांठल	देवलिया	प्रतापगढ
पालन	दशपुर	झालावाड
व्याघ्रावाट	वांगड	बांसवाडा
जाबालीपुर	स्वर्णगिरि	जालौर
कुरू		भरतपुर, करौली
शौरसेन		धौलपुर
हयहय		कोटा, बूंदी
चंद्रावती		आबू, सिरोही
छप्पन मैदान		प्रतापगढ, बांसवाडा के छप्पन ग्राम समूह
मेवल		डूंगरपुर, बांसवाडा के बीच का भाग
ढूंढाड		जयपुर
थली		चुरू, सरदार शहर
हाडौती		कोटा, बूंदी, झालावाड
शैखावटी		चरू, सीकर, झुंझनू

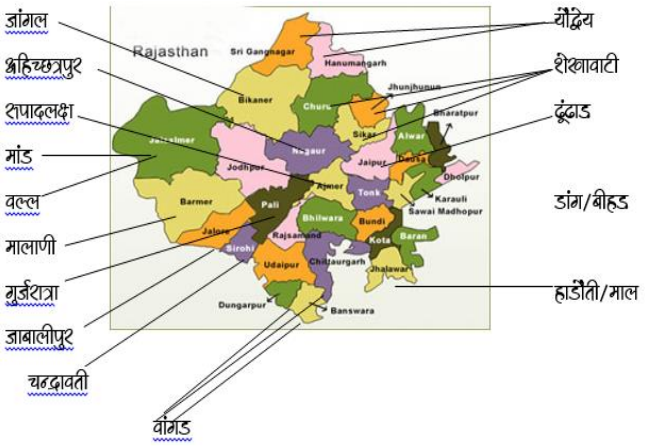

राजस्थान के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक स्थानों की वर्तमान स्थिति

(1) **वागड़**:– राजस्थान के दक्षिणी भाग को कहा जाता है जहॉ वागड़ी बोली बोली जाती है। इसमें शामिल जिले–(बॉसवाड़ा, डूँगरपुर व प्रतापगढ)
बांगड़:– अरावली का पश्चिमी भाग जहॉ पुरानी जलोढ मिट्टी स्थित है जिसका विस्तार पाली, नागौर, सीकर, झूंझूनू में हैं।

(2) **थली**:– मरूस्थल के ऊँचे उठे हुए भाग को थली कहा जाता है। इसमें शामिल जिले– बीकानेर व चूरू
– यहॉ कोई नदी नही है

तल्ली:– पश्चिमी राजस्थान में बालूका स्तूपों के मध्य भूमि को तल्ली या प्लाया कहा जाता है। ये सर्वाधिक जैसलमेर में पाई जाती है।

(3) **राठी**:–
25cm. से कम वर्षा वाले क्षेत्र को राठी कहा जाता है। इसमें शामिल जिले:– बीकानेर, जैसलमेर व बाड़मेर इस क्षेत्र में पाई जाने वाली गाय की नस्ल को भी राठी कहा जाता है।
राठी/अहीरवाटी :– यादव (अहीर) वंश द्वारा शासित प्रदेश जिसका विस्तार मुख्यतः अलवर व जयपुर की कोटपुतली तहसील में है।

(4) **माल/हाड़ौती**:–
बेसाल्ट लावा के द्वारा निर्मित भौतिक प्रदेश जिसका विस्तार कोटा, बूँदी, बारा व झालावाड़ में है।
मालव :– MP के मालवा पठार का विस्तार राजस्थान के जिन जिलों में है उन्हें मालव कहा जाता है। प्रतापगढ़ व झालावाड़

(5) **शेखावाटी**:–
शेखावतों के द्वारा शासित प्रदेश जिसमें चूरू, सीकर व झूंझूनू जिले शामिल है।
तोरावाटी:– कॉंतली नदी के अपवाह क्षेत्र को तोरावटी कहा जाता है। इसमें शामिल जिलें – सीकर, झुंझनू

(6) **मरू:–**
अरावली के पश्चिम का शुष्क प्रदेश/मरूस्थलीय प्रदेश जिसमें मुख्यतः जोधपुर संभाग शामिल है।
मेरू:– मेरू अरावली को कहा जाता है जो राजस्थान का प्राचीनतम भौतिक प्रदेश है।

(7) **मत्स्य संघ** :–
राजस्थान के एकीकरण के प्रथम चरण को मत्स्य संघ कहा जाता है । जिसका गठन 18 मार्च 1948 को अलवर, भरतपुर, धौलपुर तथा करौली को मिलाकर किया गया है। ''मत्स्य संघ शब्द K.M. मुंशी द्वारा दिया गया ।
मत्स्य:– ऐतिहासिक जनपदकाल में अलवर के दक्षिण पश्चिमी भाग को मत्स्य कहा जाता था जिसकी राजधानी बैराठ (परिवर्तित नाम विराटनगर) (जयपुर) में स्थित थी।

बैराठ → कुरू (अलवर). → इन्द्रप्रस्थ
बैराठ → शूरसेन (भरतपुर, धौलपुर, करौली) → राजधानी–मथूरा

(8) **मेवात**:– मेवात अलवर, भरतपुर जिले को कहा जाता है क्योंकि इस क्षेत्र में मेव जाति का आधिपत्य रहा है।

मेवल:– डूँगरपुर व बॉसवाड़ा के मध्य के पहाडी क्षेत्र को मेवल कहा जाता है। यह मुख्यतः भील जनजाति का क्षेत्र है।

(9) **बीड़:–** शेखावटी के झूंझूनू जिले में पाई जाने वाली चारागाह भूमि को बीड़ कहा जाता है।
बीहड़/डांग:–चम्बल नदी के क्षेत्र में अवनालिका अपरदन (Gully Exorion) के कारण भूमि उबड–खाबड़ (Badland/उत्खात) हो जाती है, उसे बीहड़ कहते है।
इसमें शामिल जिले:– C- करौली, D- धौलपुर,s.m.- सवाई माधोपुर

(10) **भोराट**:–
उदयपुर की गोगुन्दा पहाडी व राजसमन्द की कुम्भलगढ़ पहाडी के मध्य का पठारी भाग, यह राजस्थान का दूसरा ऊँचा पठार है (1225m.)
भोमट:– उदयपुर का दक्षिणी भाग व मुख्यतः डूँगरपुर के मध्य का पहाड़ी क्षेत्र भोमट कहलाता है। इस क्षेत्र में मुख्यतः भील जनजाति पाई जाती है।

(11) **ब्रजनगर (Brajnagar):–** झालावाड़ के झालापाटन का प्राचीन नाम
बृजनगर (Brijnagar):– राजस्थान के भरतपुर जिले को कहा जाता है जो मुख्यतः UP से संलग्न/लगता हुआ है।

(12) **मारवाड़**:– पश्चिमी राजस्थान को कहा जाता है जहॉ मुख्यतः मारवाड़ी बोली बोली जाती है। इसका विस्तार मुख्यतः जोधपुर संभाग में है।
मेवाड़:– ऐतिहासिक काल में उदयपुर, चित्तौड़गढ़ व राजसमन्द, भीलवाडा मेढपाद/प्राग्वाट को मेवाड कहा जाता था।
मेरवाड़ा:– मारवाड़ व मेवाड़ के मध्य स्थित क्षेत्र जिसका विस्तार मुख्यतः अजमेर व आंशिक रूप से राजसमन्द शामिल है। एकीकरण के अन्तिम चरण (1 नवम्बर 1956) में इसे राजस्थान में मिलाया गया।

(13) **योद्वेयः–** राजस्थान के उत्तरी भाग को कहा जाता है जिसमें गंगानगर व हनुमानगढ़ शामिल है।

(14) **जांगलः–** बीकानेर व जोधपुर के उत्तरी भाग को कहा जाता है जहॉ मुख्यतः कंटीली वनस्पति पाई जाती है।. इसकी राजधानी अहिच्छत्रपुर थी।

(15) **अहिच्छत्रपुरः**– ऐतिहासिक काल में नागौर को कहा जाता है जंगल की राजधानी थी।

(16) **सपादलक्षः**– ऐतिहासिक काल में अजमेर को कहा जाता था जहॉ चौहानों का शासन था।

(17) **ढूँढाडः–** ढूंढ नदी के कारण मुख्यतः जयपुर व दौसा, टोंक क्षेत्र को ढूंढ़ाड कहा जाता था।

(18) **शूरसेनः**– ऐतिहासिक जनपदकाल में राजस्थान के पूर्वी भाग को शूरसेन कहा जाता था। इसकी राजधानी मथूरा थी।

जिसमें शामिल जिलेः– B- भरतपुर, C- करौली, D- धौलपुर

ABCD	-	मत्स्य संघ
BCD	-	शूरसेन.
CD+SWM	-	डांग/बीहड़
AB	-	मेवात

(19) **हयाहयः–** ऐतिहासिक काल में कोटा व बूँदी के क्षेत्र को हयाहय कहा जाता था।

(20) **शिवीः**– उदयपुर, चित्तौड़गढ़ क्षेत्र को कहा जाता था जिसकी राजधानी नगरी/मज्झमिका/मध्यमिका थी।

(21) **चन्द्रावतीः**– सिरोही व प्राचीन नाम जहॉ से भूकम्परोधी इमारतों के अवशेष प्राप्त हुए है।

(22) **जाबालीपुरः**– जाबाली ऋषि की भूमि जिसे वर्तमान में जालौर कहा जाता है। इस क्षेत्र में जाल वृक्ष पाए जाते है।

(23) **मालाणीः**– प्राचीन समय में बाड़मेर को मालाणी कहा जाता था।

(24) **मांडः**– पश्चिमी राजस्थान में मांड गायिकी के क्षेत्र को मांड कहा जाता था जिसके चारों और का क्षेत्र जैसलमेर में वल्ल के नाम से जाना जाता है।

(25) **भीनमालः–** यह जालौर में स्थित है जिसे चीनी यात्री हेसांग द्वारा अपनी पुस्तक सी–यू–की'' में पीलोभालों लिखा गया है।

3. राजस्थान के भौतिक प्रदेश एवं विभाग (Physical Regions &Divisions of Raj)

राजस्थान के भौतिक प्रदेशो को मोटे तौर पर चार भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश
2. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश
4. दक्षिणी–पूर्वी पठारी प्रदेश (हाडौती प्रदेश)

मरूस्थल का अध्ययनः–

मरूस्थल को अध्ययन की दृष्टि से 2 भागो में बांटा जाता है।

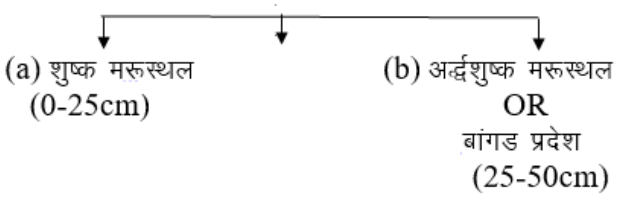

नोटः–'' 25 cm. समवर्षा रेखा'' मरूस्थल को शुष्क व अर्द्धशुष्क दो भागों में बॉटती है।

(a) **शुष्क मरूस्थलः–** 25 cm. से कम वर्षा वाले भौतिक प्रदेश को शुष्क मरूस्थल कहा जाता है।

नोटः–बालूका स्तूप :– जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण किया जाता है तो बनने वाली स्थलाकृति को बालूका स्तूप कहा जाता है जो सर्वाधिक जैसलमेर जिले में है।

- हमादा के चारों ओर स्थित बालूका स्तूपों को तारानुमा बालूका स्तूपों को तारानुमा बालूकास्तूप कहा जाता है।

- बरखान के विपरीत या हेयरपिन जैसी आकृति का बालूकास्तूप ''पेराबोलिक'' कहलाते हैं।
  नोटः– यह बालूकास्तुप राजस्थान में सर्वाधिक पाए जाते हैं।

बरखान के निर्माण के दौरान जब पवन की दिशा में परिवर्तन होता है तो बरखान की एक भुजा एक दिशा में आगे की ओर बढ़ जाती है जिसे सीफ कहा जाता है।

(vii) स्क्रब कापीस (Scrub Coppies) :–
मरूस्थल में झाडियों के पास पाए जाने वाले छोटे बालूका स्तूप

➢ यह सर्वाधिक जैसलमेर में पाए जाते है।

1 बरखान	–	अनुप्रस्थ
2 सीफ	–	अनुदैर्ध्य/रेखीय
3 सर्वाधिक बालूका स्तूप	–	जैसलमेर
सभी प्रकार के बालूकास्तूप	–	जोधपुर

(b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेशः–

25–50 सेमी वर्षा या शुष्क मरूस्थल व अरावली के मध्य का भौतिक प्रदेश अर्द्धशुष्क मरूस्थल कहलाता है।
इसे अध्ययन की दृष्टि से पुनः 4 भागो में बॉटा जाता हैः–
1. लूनी बेसिन
2. नागौर उच्च भूमि
3. शेखावाटी अन्तः प्रवाह
4. घग्घर बेसिन

पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश से संबंधित विशेष तथ्य

पश्चिमी राजस्थान में परम्परागत रूप से जल संरक्षण की अनेक पद्धतियॉ पायी जाती है जो हैंः–

1. प्लाया/खड़ीन/ढ़ाढ़ झीलः–

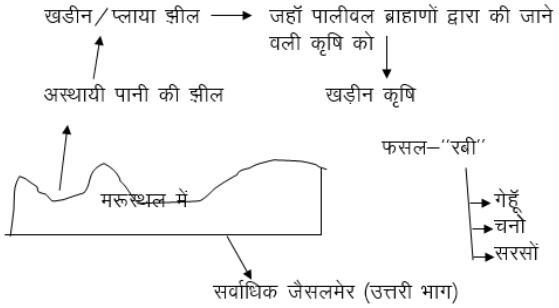

2. आगोरः– घर के ऑगन में निर्मित जल संग्रहण के लिए बना टाका या झालरा आगोर कहलाता है।

3. नाडीः– प्राकृतिक गड्ढे में जल का संग्रहण नाडी कहलाता है जिसके जल का उपयोग पशुपालन एवं दैनिक कार्यो के लिए किया जाता है।

4. बावड़ीः– सामान्यतः सीढीनुमा चोकोर तालाब बावड़ी कहलाता है।

5. बेरा या बेरीः– खडीन या टोबा या नाडी से रिसने वाले जल के सदुपयोग के लिए इसके चारों ओर छोटे–छोटे कुऍ बना दिये जाते है जिन्हे जैसलमेर के आसपास के क्षेत्रों में बेरा या बेरी कहा जाता है।

6. टोबाः– कृत्रिम रूप से निर्मित गड्ढ़े में जल संग्रहण टोबा कहलाता है।

7. जोहड या खूँः– शेखावाटी क्षेत्र में पाये जाने वाले कुएं जोहड़ या खूँ कहलाते है जो ढोबा या नाडी में रिसने वाले जल का सदुपयोग करने के लिए निर्मित किये जाते है।

1. मरूद्भिद् (XEROPHYTE)
अरावली के पश्चिम में पायी जाने वाली कंटीली झाडियॉ एवं वनस्पति मरूद्भिद कहलाती हैं। इनकी जड़े अधिक गहरी तथा पत्तियॉ कॉटो के रूप में होती है। जैसे बबूल, कैर, बेर, नागफनी, आक, फोग, खेजडी, खींप, रोहिडा, झरबेरी इत्यादि।
2. चॉधन नलकूपः–
जैसलमेर का वह क्षेत्र जहॉ मीठा भूमिगत पानी मिलता है। चॉधन नलकूप कहलाता है। इसे 'थार का घड़ा' भी कहते है। इसका कारण यहॉ पौराणिक सरस्वती नदी के अवशेष होना बताया जाता है।

3. मरूद्यान या नखलिस्तान(OASIS):– मरूस्थल में वह क्षेत्र जहॉ जल की उपलब्धता होने के कारण वह क्षेत्र हरा–भरा हो जाता है, जैसे चॉधन नलकूप, श्री कोलायत झील।

4. तल्ली/मरहो/बालसन
मरूस्थल में बालूका स्तूपों के मध्य मिलने वाली निम्न भूमि तल्ली/मरहो/बालसन कहलाती है।

5. रन/टाटः–
मरूस्थल में लवणीय, दलदली व अनुपजाऊ भूमि को रन/टाट कहा जाता है। रन सर्वाधित जैसलमेर में पाए जाते हैं।

6. **प्लाया/खारी झीलें/सेलिना या सेलाइना**
बालूका स्तूपों के मध्य निम्न भूमि में जल एकत्रित होने से निर्मित खारी झीलें प्लाया कहलाती है।

7. **लाठी सीरीज**
जैसलमेर के उत्तर पूर्व में 60 किमी लम्बी भूगर्भीय जल पट्टी लाठी सीरीज कहलाती है। यह क्षेत्र 'सेवण या लीलोण' घास के लिए प्रसिद्ध है।

8. **बाप बोल्डर क्लेः–**
बोर्ल्डर क्लेः– हिमानी/ग्लेशियर के द्वारा जमा किए गए अवसाद
स्थानः– जोधपुर(बाप)
समयः– पर्मो–कार्बोनीफेरस(25–28 करोड़ वर्ष पूर्व)

9. **मरूस्थलीकरण/मरूस्थल का मार्चः–**
- क्याः– मरूस्थल का आगे बढ़ना/विस्तार
- दिशाः– SW - NE
- विस्तार सर्वाधिक :–हरियाणा
- सर्वाधिक योगदानः– बरखान

क्योकि इनकी गति या स्थानान्तरण सर्वाधिक होता है।
नोटः–
- Erg (अर्ग) ⟶ रेतीला
- रेग ⟶ दोनो(रेतीला+पथरीला)
- हमादा ⟶ पथरीला

निष्कर्षणः–मरूस्थल में इसी हरियाली के कारण पेड़–पोधे जीव जन्तु एवं मानव–जीवन मिलता है। यही कारण है कि थार का मरूस्थल विश्व का सर्वाधिक जैव–विविधता वाला मरूस्थल है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य –

⇨ **मावठ/महावठः–** भूमध्यसागरीय चक्रवातों या पश्चिमी विक्षोभ से शीतकाल में होने वाली वर्षा मावठ कहलाती है।
यह रबी की फसल विशेषकर गेहूँ के लिए अमृत तुल्य होती है। इस कारण इसे ''गोल्डन ड्रॉप्स (Golden Drops)** भी कहा जाता है।

⇨ **समगांवः–** जैसलमेर जिले में अवस्थित पूर्णतः वनस्पतिरहित क्षेत्र है जहॉ फिल्मों की शूटिंग होती है तथा यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है। यहां 0 सेमी. बारिश होती है।

⇨ **आंकलगॉवः–** राजस्थान का एकमात्र ''वूड फॉसिल्स पार्क''(लकडी के जीवाश्म का) हैं। यहॉ 8 करोड वर्ष पुराने जूरासिक काल के लकड़ी के अवशेष मिले हे। यह राष्ट्रीय मरूउद्यान का ही भाग हैं।

⇨ **मरूस्थलीकरणः–**मरूस्थल का निरन्तर प्रसार जिसके कारण भूमि का धीरे–धीरे बंजर होते जाना ही मरूस्थलीकरण कहलाता है। इसे 'मार्च पास्ट ऑफ डेजर्ट' भी कहते है।

⇨ **लघु मरूस्थल/थलीः–** थार के मरूस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ के रन से बीकानेर तक विस्तृत है, लघु मरूस्थल कहलाता है। यह अपेक्षाकृत नीचा है। इसे बीकानेर के आस–पास के क्षेत्र में इसे थली तथा यहॉ के निवासियों को थलिया भी कहते है।

⇨ **धरियनः–** जैसलमेर जिले में कम आबादी वाले स्थानों पर पाये जाने वाले स्थानान्तरित बालुका स्तूप धरियन कहलाते है।

⇨ **सर/सरोवरः–**विशेष रूप से शेखावाटी एवं सामान्यतः पश्चिमी राजस्थान में तालाबों को सर या सरोवर कहा जाता है। जैस–अलसीसर, मलसीसर, कोडमदेसर आदि।

⇨ **पीवणा** – पश्चिमी राजस्थान में पाया जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प पीवणा है।

2. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश

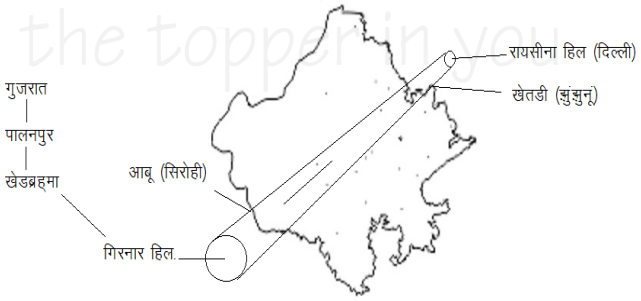

- इसका विस्तार दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर, खेड ब्रह्म (गुजरात) से रायसीना हिल्स (दिल्ली) तक है।
- **क्षेत्रफल** –यह भूभाग राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 9 प्रतिशत तथा जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत धारण किये हुए हैं।
- **लम्बाई एवं ऊँचाई–** इसकी कुल लम्बाई 692 किमी है जिसका 80 फीसदी (550 कि.मी.) राजस्थान में है। इसकी औसत ऊँचाई 930 मी. है।
- **जलवायु एवं वायुदाब**– यहॉ उपार्द्र जलवायु पायी जाती है। औसत वायुदाब एवं औसत वायुवेग एवं औसत तापक्रम पाया जाता है।

- **वर्षण**– यहॉ 50–80 से.मी. के मध्य वर्षा होती है। 50 सेमी. वर्षा रेखा इसे पश्चिमी मरूस्थल क्षेत्र से अलग करती है।
- **खनिज एंव चट्टानें:–** यहॉ पर तांबा, लोहा, चॉदी, मैंगनीज आदि धात्विक खनिज एवं ग्रेनाइट, नील, सिस्ट इत्यादि प्राचीनतम चट्टानें मिलती है।
- **प्रकृति**– गोंडवाना क्षेत्र का यह भाग प्रिकेम्बियन काल में निर्मित एवं अवशेषी वलभित पर्वत माला के रूप में हैं।
- **मृदा**– यहॉ पर पर्वतीय मिट्टी तथा पर्वतीय अपरदन से निर्मित काली तथा लाल मिट्टियॉ पायी जाती हैं।
- **विस्तार**– इसका विस्तार मुख्यतः 9 जिलों डूंगरपुर, बांसवाड़ा, सिरोही, उपदयपुर, राजसमंद, चित्तोड़गढ़, अजमेर, पाली, भीलवाड़ा में है।
- **वनस्पति**– यहॉ पर पर्वतीय वनस्पति जिनकी जड़े कम गहरी होती है, पायी जाती है तथा यहॉ मुख्यतः मक्का की खेती होती है।
- **उच्चावच**– इस क्षेत्र में पहाड़–पहाड़ी, डूॅगर–डूॅगरी, दर्रे या नाल पाये जाते हैं।

अरावली का अध्ययन

नोटः– 1. अरावली की सर्वाधिक ऊॅचाई– सिरोही
अरावली की सर्वाधिक विस्तार– उदयपुर
2. अरावली का सबसे कम विस्तार व न्यूनतम ऊॅचाई– अजमेर
3 अरावली की सर्वोच्च चोटी(अवरोही क्रम में):–

	Trick	चोटी	स्थान	ऊॅचाई
1.	गुरू	गुरूशिखर	सिरोही	1722 मी.
2.	से	सेर	सिरोही	1597 मी.
3.	दिलसे	देलवाड़ा	सिरोही	1442मी.
4.	जरा	जरगा	उदयपुर	1431मी.
5.	आस	अचलगढ़	सिरोही	1380 मी.
6.	कुंभा	कुंभलगढ़	राजसमन्द	1224 मी.
7.	रघुनाथ	रघुनाथगढ़	सीकर	1055 मी.
8	ऋषि	ऋषिकेश	सिरोही	1017 मी.
9	का	कमलनाथ	उदयपुर	1001 मी.
10	सज्जन	सज्जनगढ़	उदयपुर	938 मी.
11	मोर	मोरमजी/टॉडगढ	अजमेर	934 मी.
12	खों में	खो	जयपुर	920 मी.
13	सा	सायरा	उदयपुर	900 मी.
14	त	तारागढ़	अजमेर	873 मी.
15	बोली	बिलाली	अलवर	775 मी.
16	रोज	रोजा भाकर	जालौर	730 मी.
17	बोली	–	–	–

अरावली व राजस्थान की अन्य प्रमुख पहाडियॉः–

भाकर – सिरोही
पहाडी का नाम भाकर/भाकरी – जालौर
पहाड़ी का नाम मगरा/मगरी – उदयपुर
पहाडी का नाम डूंगर/डूंगरी – जयपुर

1. त्रिकूट पहाडी.(सोनार दुर्ग) – जैसलमेर
2. त्रिकूट पर्वत(कैलादेवी) – करौली
3. चिड़ियाटूंक पहाड़ी(मेहरानगढ़) – जोधपुर
4. छप्पन पहाडियॉ – बाड़मेर

*''गिरवा'' का शाब्दिक अर्थ– पर्वतों की मेखला(श्रंखला) जो द. अरावली में उदयपुर में स्थिति है

5. सुंडा पर्वत – जालौर
   * सुन्धा माता मन्दिर
   * प्रथम रोप–वे(2006)
   * भालू संरक्षित क्षेत्र

6. भाकर –सिरोही
   दक्षिणी अरावली में सिरोही में स्थित छोटी व तीव्र ढ़ाल वाली पहाडियों को ''भाकर'' कहा जाता हैं।
7. हिरण मगरी – उदयपुर
8. मोती मगरी(फतेह सागर) – उदयपुर
9. मछली मगरा(पिछोला झील) – उदयपुर.
   द्वितीय रोप–वे(2008)
10. जरगा – उदयपुर
11. रागा पहाडी – उदयपुर

दक्षिणी अरावली में जरगा–रागा पहाडियों के मध्य हरे–भरे क्षेत्र को उदयपुर में ''देशहरो'' कहा जाता है।

अरावली की दिशाः– दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व

पीपली नाल (सिरोही) :– राजस्थान की सर्वाधिक ऊॅचाई वाली नाल है ।

* बर नाल से पूर्णतः राजस्थान में अवस्थित सबसे लम्बा राजमार्ग एन. एच. 112 गुजरता है।
* पर्वतों में स्थित संकरे मार्गो को दर्रे कहा जाता है जिन्हे हिमालय क्षेत्र में ला, अरावली क्षेत्र में नाल तथा पठारी क्षेत्र में घाट के नाम से जाना जाता है।
* नाल को मान्यता RSRTC तथा RSRTC देती है ।

पूर्वी मैदानी प्रदेश

पूर्वी मैदानी प्रदेश की भौतिक विशेषताऐं निम्नांकित है–

- यह राजस्थान का कुल क्षेत्रफल का लभगग 23 प्रतिशत तथा जनसंख्या का लगभग 39 हिस्सा धारण करता है।
- अरावली पर्वत माला के पूर्वी भाग में गंगा एवं यमुना के मैदानी भाग से मिला हुआ है। इसे यदि नदी बेसिन प्रदेश कहा जाए तो उपयुक्त होगा।
- यह मुख्य रूप से अग्रलिखित जिलो में विस्तृत है– अलवर, भरतपुर, करौली, दौसा, सवाईमाधोपुर, (ABCDS) जयपुर, दौसा, टोंक, डूंगरपुर, बॉसवाड़ा, प्रतापगढ़ आदि।

पूर्वी मैदानी को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है–

चम्बल बेसिन | बनास बाणगंगा बेसिन | माही बेसिन.

1. चम्बल नदी बेसिन

यह मुख्यतः कोटा, चित्तौडगढ़, सवाईमाधोपुर, करौली, बूंदी एवं धोलपुर जिलों में आता है।

- इसका ढाल दक्षिण से उत्तर, पश्चिम से पूर्व तथा उत्तर पूर्व की ओर है।
- चम्बल की सहायक नदियां :– बनास, सीप, पार्वती, कालीसिंध, परवन,
- **उच्चावचः–**(i) **उत्खात स्थलाकृति–** चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में नदी ढाल तीव्र होने और कोमल कठोर चट्टानों के समान्तर या एकान्तर क्रम से निर्मित गड्ढ़ो वाली ऊबड–खाबड स्थलाकृति उत्खात कहलाती हैं।

  (ii) **डांग–** चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में पायी जाने वाली ऊबड खाबड़ उत्खात स्थलाकृति, बीहड़ भूमि तथा अनुपजाऊ गहरी भूमि क्षेत्र स्थानीय भाषा में डांग कहलाता है। यहां दस्यु सरगना निवास करते हैं।(इरफान खान का प्रसिद्ध संवाद हैं–'डाक तो संसद में है, बीहड़ में तो बागी रहते) (पान सिंह तोमर)।

  (iii) **खादरः–** चम्बल नदी बेसिन में लगभग 5 से 30 मी. गहरे गड्डे एवं बीहडो से निर्मित भूमि स्थानीय भाषा में खादर कहलाती है।

- सर्वाधिक बीहड़ एवं डांग क्षेत्र करौली एवं सवाईमाधोपुर में है।

2. बनास व बाणगंगा मैदान

(1) **बनास मैदानः–** दो भागो में बंटा हुआ है।

दक्षिणी मैदान	उत्तरी मैदान
मेवाड मैदान	मालपुरा–करौली मैदान
विस्तारः–राजसमन्द	विस्तारः–अजमेर
भीलवाड़ा	टोंक
चित्तौड़	सवाई माधोपुर

नोटः– बनास के मैदान में मुख्यतः ''भूरी मिट्टी'' पाई जाती है।

(2) **बाणगंगा मैदानः–**
विस्तार– जयपुर–दौसा–भरतपुर
मिट्टी– जलोढ़

(3) **पीडमॉट का मैदानः–** अरावली पर्वत श्रेणी में देवगढ़(राजसमंद) के पास का निर्जन का टीलेनुमा भाग पीडमॉट कहलाता है।

(4) **माही बेसिनः–** इसे ''भाटी का मैदान'', ''छप्पन का मैदान'' तथा ' बागड़ प्रदेश' भी कहते है। यह बेसिन डूॅगरपुर, बॉसवाड़ा प्रतापगढ़ एवं चित्तौडगढ़ में छप्पन गॉवो एवं छप्पन नदी नालों के मध्य फैला हुआ है इस लिए इसे छप्पन का मैदान कहा जाता है।

- **ढाल–** इसका ढाल पहले उत्तर की तरफ फिर पश्चिम की तरफ है।

राजस्थान में सर्वाधिक तीव्र ढाल माही एवं उसकी सहायक नदियों का ही हैं।

- **सहायक नदियॉ**

shortcut — सोजा ए अएचा
सोम जाखम एरण अनास एराव चाप

- सोम जाखम एवं माही नदियॉ मिलकर 'बेणेश्वर' नामक स्थान पर त्रिवेणी संगम बनाती है जहॉ माघ पूर्णिमा को 'आदिवासियों' का कुंभ' उपनाम से मेला भरता हैं।
- **कांठल या कांठे का मैदानः–** माही नदी के कांठे पर स्थित मैदान को कांठल कहा जाता है।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशो में चौथा भाग है–दक्षिणी–पूर्वी पठारी प्रदेश।

- यह राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित पठारी भाग है जो मालवा के पठार का ही विस्तार है।

मालवा का पठार–मध्यप्रदेश
मालवा का मैदान–द. पंजाब

- यह राजस्थान के कोटा, बूँदी, बारा, झालावाड़ एवं चित्तोडगढ़ के कुछ भाग में विस्तृत है।

- **क्षेत्रफल एवं जनसंख्याः**– यह क्षेत्र राज्य का 7 प्रतिशत क्षेत्रफल एवं लगभग 11 प्रतिशत जनसंख्या को धारण करता है।

- **जलवायुः–** यहॉ आर्द्र एवं अतिआर्द्र जलवायु पायी जाती है। यहॉ सापेक्षतः राजस्थान में सबसे कम तापक्रम, उच्च वायुदाब, कम वायुवेग एवं अधिक आर्द्रता स्थिति पायी जाती हैं।

- **वर्षणः–** यहॉ लगभग 80–120 सेमी के मध्य वर्षण होता है।

- **वनस्पतिः–** यहॉ मुख्यत पतझडी वनस्पति पायी जाती है, जैसे धोक/धोकडा, शीशम, आम, महुआ, नीम, सागवान, साल इत्यादि।

- **कृषिः–** यहॉ मुख्यतः कपास, गन्ना, विभिन्न दाले गेहूँ, चावल, सरसो, फलो, सब्जियो, जौ आदि की पैदावार की जाती है।

- **मृदाः–** यहॉ लावा पठार के कारण मध्यम काली, लाल, पीली, चट्टानी तथा चम्बल बेसिन क्षेत्र में जलोढ़ मृदा पायी जाती है।

- **उच्चावचः–** सामान्यतः पठारी प्रदेश, कही–कहीं नदी बेसिन प्रदेश में मैदान तथा चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में उत्खात स्थलाकृति व डांग क्षेत्र पाया जाता है।

- **खनिजः–** प्राचीन गोंडवाना भूमि का भाग होने के कारण यहॉ मुख्यत धात्विक तथा कहीं–कही अधात्विक खनिज भी पाये जाते है, जैसे गारनेट, अभ्रक, कोटा स्टोन, इत्यादि।

विंध्यन कगारः– यह कगार भूमि विन्ध्याचल एवं अरावली का मिलन स्थल है। यह धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, चित्तोड़गढ़, कोटा, भीलवाड़ा आदि जिलो में बालुका पत्थरों से निर्मित है। इन कगारो का मुख बनास एवं चम्बल नदी के बीच दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व की ओर है तथा बुन्देलखण्ड से पूर्व की ओर फैले हुए है।

एक अन्य मत के अनुसार हाडौती पठार को पॉच धरातलीय प्रदेशो में विभक्त किया जाता है ।

इस प्रदेश में अर्द्धचन्द्राकार रूप में पर्वत श्रेणियों का विस्तार है जो क्रमशः बूँदी एवं मुकन्दवाड़ा की पहाडियों के नाम से जानी जाती है। इस श्रेणी का सर्वोच्च शिखर चन्दवाडी क्षेत्र में 517 मी. ऊँचा है। इस पठार के पूर्वी भाग में शाहबाद का उच्च क्षेत्र तथा दक्षिण–पूर्वी भाग डग–गंगधार का उच्च क्षेत्र है वही मुकन्दवाड़ा श्रेणी के दक्षिण में 300–400 मी. ऊँचाई का झालावाड़ का पठारी प्रदेश है।

1. **उड़िया का पठारः–** यह पठार माउण्ट आबू में गुरूशिखर के नीचे लगभग 1360 मी. ऊँचा पठारी भाग है। यह राजस्थान का सर्वोच्च पठार है जो आबू पर्वत से लगभग 160 मी. अधिक ऊँचा है।

2. **आबू पर्वतः–** यह सिरोही जिले में अवस्थित राजस्थान का दूसरा सर्वोच्च पठार है जिसकी ऊंचाई लगभग 1200 मी. है।

3. **ऊपरमाल** भैंसरोड़गढ़(चित्तौड़गढ़) से बिजोंलिया(भीलवाड़ा) के मध्य का भू–भाग रियासत काल में ऊपरमाल के नाम से जाना जाता था। यह विंध्याचल एवं अरावली के मध्य सक्रान्ति प्रदेश है।।(भैंस बीज के ऊपर बैठी है।)

4. **दक्कन का लावा पठारः–** यह मुख्यतः बूँदी का पठारी भाग है किन्तु इसका कुछ भाग चित्तोगढ़ एवं भीलवाड़ा में भी फैला है। यह मध्यम काली मिट्टी का क्षेत्र है। यहॉ चम्बल, पार्वती, कालीसिंध इत्यादि नदियों द्वारा सिंचाई होती है। इस क्षेत्र में स्थित पठार को ऊपरमाल का पठार भी कहते है। कोटा का 'त्रिकोणीय कांप बेसिन' भी इसी का एक भाग है।

5. **भोराटः–**दक्षिणी अरावली में उदयपुर की गोगुन्दा पहाडी व राजसमन्द की कुम्भलगढ़ पहाड़ियों के मध्य स्थित पठार जिसकी ऊंचाई 1225 मी. है।
   *यह राजस्थान का दूसरा ऊंचा पठार है।

6. **लसाडिया का पठारः–** उदयपुर जिले में जयसमन्द से आगे पूर्व की ओर विच्छेदित एवं कटा–फटा पठार है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राजस्थान का सबसे बड़ा पठार है।

7. **मेसा का पठारः–य**ह चित्तौड़गढ़ जिले में अवस्थित 620मी. ऊंचा पठारी भाग है तथा चित्तौड़गढ़ का किला भी यहॉ स्थित है।

अपवाह तंत्र

राजस्थान के अपवाह तंत्र को 3 भागों में बांटा जाता है।

अरब सागरीय नदियाँ	अंत:प्रवाही नदियाँ	बंगाल की खाडी की नदियाँ
17%	60%	23%

नोट :-

- राजस्थान में अंत: प्रवाही नदियां सर्वाधिक पाई जाती है।
  कारण- यहां मरूस्थल का विस्तार सर्वाधिक है।
- अरावली को राजस्थान की जल विभाजक रेखा कहा जाता है क्योंकि यह बंगाल की खाडी और अरब सागर की नदियों को अलग करती है।
- राजस्थान में सतही जल या नदी जल देश का 1.16 प्रतिशत है।
- भूमिगत जल राजस्थान में देश का 1.69 प्रतिशत है ।

A. अरब सागरीय नदियाँ :-

(1) लूनी (2) माही (3) पश्चिमी बनास (4) साबरमती

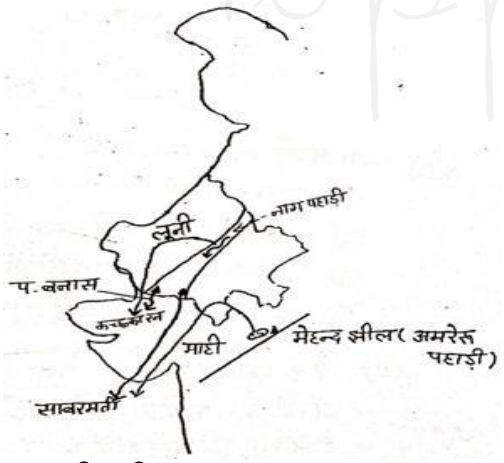

1. लूनी नदी :-
   - उद्गम – नाग पहाडी (अजमेर)
   - संगम – कच्छ का रन (गुजरात)
   - लम्बाई – 495 किमी. (राजस्थान में- 350 किमी.)

- अपवाह क्षेत्र –

Trick:- अ प ना ब जा जो

अ → अजमेर, प → पाली, ना → नागौर, ब → बाडमेर, जा → जालौर, जो → जोधपुर

- सहायक नदियाँ –

Trick:- सुकी बांडी खारी जो जवाई से मिली

सुकी → सुकडी, बांडी → बांडी, खारी → खारी, जो → जोजडी, जवाई → जवाई, से → सागी, मिली → मिठडी, लीलडी + गुहिया

नोट :-

(1) लूनी नदी के उपनाम-

a. सागरमती
b. लवणवती
c. आधी मीठी-आधी खारी नदी
d. अन्त:सलीला नदी (कालिदास ने लिखा)

(2) रेल/नाडा-

- लूनी नदी के अपवाह क्षेत्र को कहा जाता है।
- इसका विस्तार मुख्यत: जालौर में है।

(3) जोजडी-

- लूनी नदी में दायीं ओर से मिलने वाली एकमात्र नदी
- लूनी की एकमात्र सहायक नदी जिसका उद्गम अरावली से नहीं होता है।

(4) बालोतरा (बाडमेर)-

- लूनी का पानी खारा होता है।
- लूनी में बाढ इसी क्षेत्र में आती है ।

(5) राजस्थान के कुल अपवाह तंत्र में लूनी का योगदान 10.40 प्रतिशत है।

लूनी नदी से संबंधित बांध –

a. जसवंत सागर/पिचियाक बांध	–	जोधपुर (लूनी)
b. हेमावास बांध	–	पाली (बांडी)
c. जवाई बांध	–	पाली (जवाई)
d. बांकली	–	जालौर (सुकडी)

नोट :-

जवाई बांध :-

पाली में स्थित है जो पश्चिमी राजस्थान की सबसे बडी पेयजल परियोजना है। इस कारण इसे मारवाड का अमृत सरोवर कहा जाता है।

जवाई बांध में पानी की कमी होनेपर जलापूर्ति सेई जल सुरंग से की जाती है।

सेई जल सुरंग :-

- राजस्थान की प्रथम जल सुरंग
- स्थिति - उदयपुर से पाली
- जवाई में जलापूर्ति

2. **माही नदी :-**

- उद्गम - मेहन्द झील, अमरेरू पहाडी (विंध्याचल पर्वतमाला, मध्यप्रदेश)
- संगम - खम्भात की खाडी (गुजरात)
- लम्बाई - 576 किमी. (राजस्थान में- 171 किमी.)
- अपवाह क्षेत्र - बांसवाडा, डूंगरपुर
- सहायक नदियाँ -

Trick:- ए → ऐराव, अन्ना → अन्नास, चारपाई → चाप, में → मोरेन, सो → सोम, जा → जाखम

नोट :-

(1) **माही नदी के उपनाम:-**

a. वागड की गंगा
b. आदिवासियों की गंगा
c. कांठल की गंगा
d. दक्षिणी राजस्थान की स्वर्णरेखा नदी

(2) **त्रिवेणी संगम:-**

बेणेश्वर धाम (नवा टापरा/नवाटपुरा)
सोम ← माही → जाखम

- माघ पूर्णिमा को मेले का आयोजन होता है जिसे कुम्भ या आदिवासियों का कुम्भ कहा जाता है।
- इस मेले में सर्वाधिक आने वाली जनजाति = भील

(3) कर्क रेखा को 2 बार पार करने वाली विश्व की एकमात्र नदी

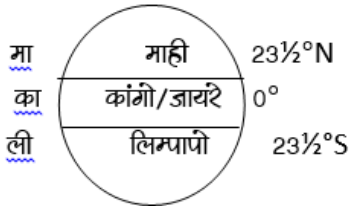

(4) राजस्थान के दक्षिण से प्रवेश कर पश्चिम की ओर बहने वाली नदी- माही

(5) **माही की बांध परियोजनाएं-**

a. माही बजाज सागर बांध परियोजना	-	बांसवाडा	उद्गम
b. कागदी पिकअप बांध	-	बांसवाडा	↓
c. कडाना बांध	-	गुजरात	
d. सोम-कागदर परियोजना	-	उदयपुर	संगम की ओर
e. सोम-कमला अम्बा	-	डूंगरपुर	
f. जाखम बांध	-	प्रतापगढ	

माही बजाज सागर बांध परियोजना :-

- यह राजस्थान-गुजरात के द्वारा संचालित बहुउद्देशीय परियोजना है। (45 : 55)
- स्थिति- बोरखेडा (बांसवाडा)
- विशेष -
- राजस्थान की सबसे लम्बी बांध परियोजना (3.109 m)
- आदिवासी क्षेत्र में सबसे बडी परियोजना
- इस परियोजना से उत्पादित जल विद्युत
  I Stage 25 MW × 2 Units = 50 MW
  II Stage 45 MW × 2 Units = 90 MW
  Total 140 MW
- राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र को विद्युत आपूर्ति की जाती है।

जाखम बांध :-

- स्थिति - सीतामाता अभ्यारण्य (प्रतापगढ)
- यह राजस्थान का सबसे ऊंचा बांध (81 m)

3. **पश्चिमी बनास नदी :-**

- उद्गम- नया सानवारा (सिरोही)
- संगम- लिटिल कच्छ रन (गुजरात)
- अपवाह क्षेत्र- सिरोही
- सहायक नदी- कूकडी, सूकली

- नोट– आबू (सिरोही)
  इसी नदी के किनारे स्थित है।
  डीसा नगर (गुजरात)

4. साबरमती नदी :–
   - उद्गम– पढराना पहाडी (उदयपुर)
   - संगम– खम्भात की खाडी
   - लम्बाई– 416 किमी. (राजस्थान में 45 किमी.)
   - अपवाह क्षेत्र– उदयपुर (1%)
   - सहायक नदियां–

Trick:- वै से ह मे मा वा चाहिए
वेतरक सेई हथमति मेरवा मानसी,माजम वाकल

साबरमती की सहायक नदियों की जल सुरंग:–
सेई जल सुरंग–
स्थिति– उदयपुर से पाली
विशेष– राजस्थान की पहली जल सुरंग व जवाई को जलापूर्ति

मानसी–वाकल जल सुरंग–
स्थिति– उदयपुर
विशेष– राजस्थान की सबसे लम्बी जल सुरंग (11.2 किमी)
देवास/मोहनलाल सुखाडिया परियोजना को जलापूर्ति करती है ।

B. अन्त:प्रवाही नदियाँ :–

1. घग्घर नदी :–

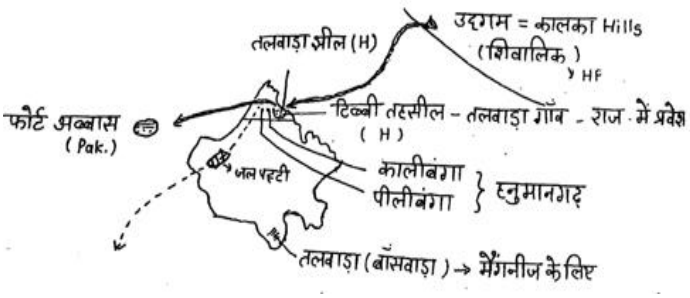

- उद्गम– कालका पहाडी (शिवालिक श्रृंखला, हिमाचल प्रदेश)
- अपवाह क्षेत्र– गंगानगर व हनुमानगढ

नोट–
(1) उपनाम–
   a. सरस्वती (प्राचीनतम नाम)– Sorrow of Rajasthan
   b. मृत नदी
   c. नट नदी
   d. दृषद्वती नदी
   e. सीता नदी

(2) अपवाह क्षेत्र–

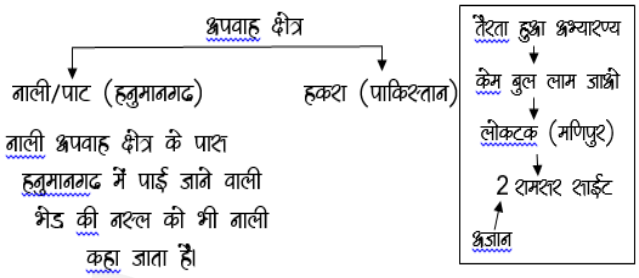

(3) फोर्ट अब्बास– पाकिस्तान में स्थित घग्घर का अंतिम स्थान
(4) जल पट्टी– जैसलमेर में स्थित जो सरस्वती नदी का अवशेष है।
(5) श्रीराम वाडेरे व हनुवन्ता राय को सरस्वती नदी के प्राचीन मार्ग को खोजने के लिए नियुक्त किया गया है।
(6) हिमालय (शिवालिक) से राजस्थान आने वाली एकमात्र नदी – घग्घर

जो देश की सबसे लम्बी अन्त:प्रवाही नदी है।

2. काँतली नदी :–
   - उद्गम– खंडेला पहाडी (सीकर)
   - अपवाह क्षेत्र– सीकर, झुंझुनु
   - नोट– इसके अपवाह क्षेत्र को तोरावाटी कहा जाता है।

3. बाणगंगा नदी :–
   - उद्गम– बैराठ पहाडी (जयपुर)
   - अपवाह क्षेत्र– जयपुर, दौसा, भरतपुर
   - उपनाम–
     a. अर्जुन की गंगा
     b. ताला नदी
     c. रूण्डित (Beheaded) – वह नदी जो अपनी मुख्य नदी में गिरने से पहले समाप्त हो जाती है। यह दर्जा राजस्थान में 2012 से बाणगंगा को दिया गया है ।

4. साबी नदी :-

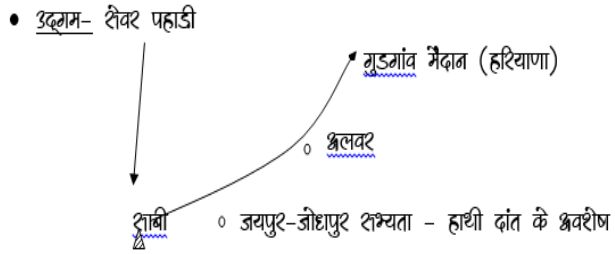

- राजस्थान से हरियाणा के गुड़गांव मैदान में विलीन होने वाली एकमात्र नदी ।

5. रूपारेल/वराह नदी :-

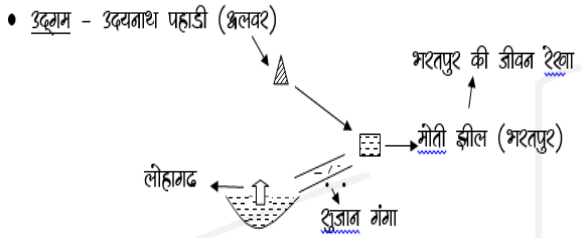

नोट-

- मोती झील:- भरतपुर में रूपारेल नदी पर निर्मित जिसे भरतपुर की जीवन रेखा कहा जाता है ।
- गुजान गंगा:- यह एक लिंक या चैनल है जो मोती झील से जलापूर्ति मोती झील से लोहागढ तक करता है।

6. काकनी/काकनेय या मसूरनी नदी :-
   - उद्गम- कोठरी गांव (जैसलमेर)
   - नोट- बुझ झील जैसलमेर में इसी नदी पर स्थित है।.

नोट :- सांभर की सर्वाधिक लवण का जमाव करने वाली नदी- मेंथा

C. बंगाल की खाड़ी की नदियाँ :-

1. चम्बल नदी :-
   - उद्गम- जानापाव पहाड़ी (विंध्याचल पर्वतमाला, मध्यप्रदेश)
   - संगम- यमुना (इटावा, उत्तरप्रदेश)
   - लम्बाई- 1051 किमी (राजस्थान में 322 किमी.)
     पुरानी- 966 किमी. (राजस्थान में 135 किमी.)
   - अपवाह क्षेत्र- चित्तौड़गढ (चौरासीगढ से प्रवेश)
     कोटा, बूंदी (हयाहय)
     करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर (डांग)
   - सहायक नदियाँ-

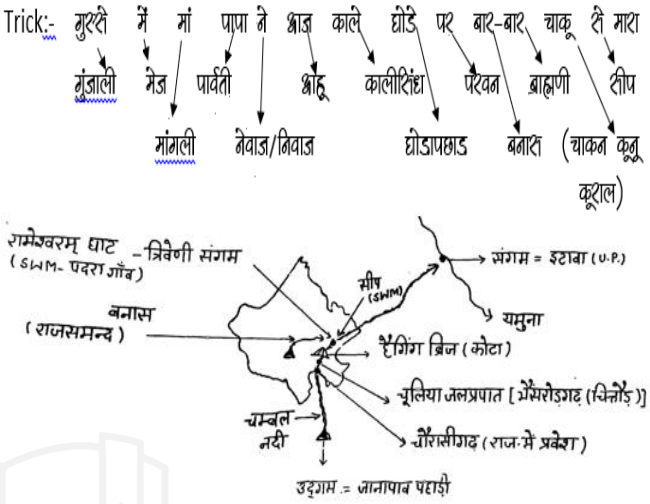

नोट-

बनास - चम्बल की सबसे लम्बी सहायक नदी।
कालीसिंध - चम्बल की दांयी ओर से सबसे लम्बी सहायक नदी।
सामेला - कालीसिंध व आहू के संगम को झालावाड़ में सामेला कहा जाता है जिसके किनारे सर्वश्रेष्ठ जलदुर्ग गागरोन स्थित है।

चम्बल की विशेषताएं-

(1) चम्बल के उपनाम- चर्मण्वती, कामधेनू, बारहमासी
कामधेनू गाय = राठी

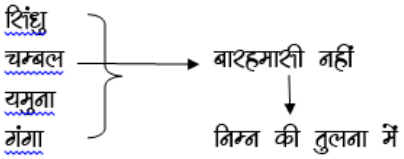

(2) त्रिवेणी संगम-

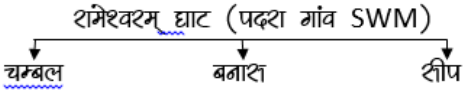

(3) चूलिया जलप्रपात-

स्थिति - भैंसरोडगढ
नदी - चम्बल
विशेष - राजस्थान का सबसे ऊंचा जलप्रपात (18 m)